(1)

Lecture Series No:- 39.

Online class,
Date-11-5-2020,
Time-10:10-10:50 A.M

Topic.

(1.) Prakriti

Dr. Surita Kumari
Subject, Philosophy
B.A Part- I (S.)
A.N.D. College Shahpur
patory, Samastipur.

Ans:-> जब हम विश्व की ओर विहंगम दृष्टिपात करते हैं। तो पाते हैं कि विश्व में अनेक वस्तुएँ हैं, जैसे नदी, पहाड़, मन, बुद्धि, अहंकार आदि। इनमें से प्रत्येक को अलग-अलग कार्य कहा जाता है। इस प्रकार संपूर्ण विश्व कार्य का प्रवाह है। (प्रवाह)। अब प्रश्न उठता है कि विश्वरूपी कार्य-श्रृंखला का क्या कारण है। विश्व का कारण पुरुष को नहीं माना जा सकता है क्योंकि पुरुष कारण की श्रृंखला से मुक्त है। वह न तो किसी वस्तु है और न कार्य ही। इसलिए विश्व का कारण पुरुष को छोड़कर किसी अन्य तत्व को मानना होगा। वह अन्य तत्व क्या है, कुछ भारतीय दार्शनिकों का जिनमें

P.T.O.

चार्वाक बुद्ध, न्याय वैशेषिक और मीमांसा मुख्य है। कहना है कि विश्व का मूल कारण पृथ्वी जल वायु और अग्नि के परमाणु है। सांख्य इस विचार का विरोध करता है।

सांख्य विश्व का कारण मानने के लिए प्रकृति की स्थापना करता है। प्रकृति एक है, इसलिए उससे विश्व की व्याख्या हो जाती है। प्रकृति जड़ होने के साथ-ही-साथ सूक्ष्म पदार्थ भी है।

इसलिए प्रकृति संपूर्ण विश्व की जिसमें स्थूल एवं सूक्ष्म पदार्थ है, व्याख्या करने में सक्षम है। प्रकृति विश्व का मूल (प्रमाण) कारण है।

परन्तु वह सर्वथ कारण-हीन है। प्रकृति शाश्वत है जबकि वस्तुएं अशाश्वत है। प्रकृति दिक् दिक् और काल

P.T.O.

Scanned with CamScanner

की सीमा से बाहर है जबकि वस्तुएँ दिक और काल में निहित है।
प्रकृति अदृश्य (Imperceptible) है, क्योंकि वह अत्यंत ही सूक्ष्मता के कारण प्रत्यक्ष का विषय नहीं है। इसका ज्ञान अनुमान से प्राप्त होता है। प्रकृति को अव्यक्त कहा जाता है। सांख्य सत्कार्यवाद में विश्वास करता है।

जिसके अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व कारण में मौजूद रहता है।

प्रकृति विश्व की विभिन्न वस्तुओं का कारण है। अतः संपूर्ण विश्व कार्य के रूप में प्रकृति में अंतर्भूत रहता है।

प्रकृति अचेतन (Unconcious) है, क्योंकि वह जड़ - जड़ में चेतन का अभाव रहता है। यद्यपि प्रकृति अचेतन है फिर भी वह (active) है। E.N.D END. o